कात्य उत्कीलः। अग्निः। त्रिष्टुप्

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः।

सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ॥ ३.०१५.०१

पृथुना- प्रभूतेन। पाजसा- बलेन। शोशुचानः- तपन्। अमीवाः- आधिव्याधिभूतानि। रक्षसः- रक्षांसि। द्विषः- द्वेषभावनानि। बाधस्व- नाशय। सुशर्मणः- शोभनस्य। बृहतः- महात्मनः। शर्मणि- शोभने। स्याम्- भवेयम्। अग्नेः- सत्क्रतोः। सुहवस्य- शोभनाह्वातुः। प्रणीतौ- प्रकर्षनीत्याम्। अहम्। स्याम्- भवेयम्॥१॥

त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः।

जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात॥ ३.०१५.०२

तन्वा सुजात- स्वदेहेन सुष्ठु जात। त्वम्। नः- अस्माकम्। अस्याः- एतस्याः। उषसाः- उदयकालस्य। विद्याया इति भावः। व्युष्टौ- व्युच्छने। त्वम्। सूरे- सूर्ये आत्मनि। उदिते। गोपाः- चिद्रश्मिपालकः सन्। बोधि- बुध्यस्व। अग्ने। नित्यम्- सततम्। तनयम्- पुत्रम्। जन्मेव- जनक इव। मे- मम। स्तोमम्- मन्त्रम्। जुषस्व- सेवस्व॥२॥

त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि।

वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ॥ ३.०१५.०३

त्वम्। नृचक्षाः- नृणामन्तर्दृक्। वृषभ- वर्षक। अग्ने। कृष्णासु- रात्रिषु च। मनुष्यप्रज्ञासु च। अरुषः- ज्वलन्। पूर्वीः- प्राचीना ज्वालाः। वि भाहि- प्रकाशय। वसो- शरण्य। नेषि- नयसि। च। अंहः- पापेभ्यः। अति पर्षि- अतिपारय। यविष्ठ- तरुणतम। उशिजः- कामयमानान्। नः- अस्मान्। राये- सम्पदे। कृधि- कुरु॥३॥

अषाळ्हो अग्ने वृषभो दिदीहि पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान्।

यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्जातवेदो बृहतः सुप्रणीते॥ ३.०१५.०४

अषाळ्हः- असह्यः। अग्ने। वृषभः- वर्षकः। विश्वाः- सर्वाणि। सौभगा- सौभाग्यानि। संजिगीवान्- सम्यक् जयन्। पुरः- पुरतः। दीदिहि- दीप्यस्व। जातवेदः- जातप्रज्ञ। बृहतः- महतः। सुप्रणीते- शोभननेतृभूत। प्रथमस्य- मुख्यस्य। पायोः- रक्षकस्य। यज्ञस्य- दानस्य। पूजायाः। सङ्गतिकरणस्य। नेता ॥४॥

अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः।

रथो न सस्निरभि वक्षि वाजमग्ने त्वं रोदसी नः सुमेके॥ ३.०१५.०५

जरितः- वृत्रजरयितः। देवान्। अच्छ- अभिलक्ष्य। दीद्यानः- दीप्तः सन्। सुमेधाः- शोभनबुद्धिः सन्। पुरूणि- प्रभूतानि। शर्म- यज्ञरूपमङ्गळानि। अच्छिद्रा- अविघ्नानि कुरु। अग्ने। सस्निः- पवित्रः सन्। रथो न- वाहनमिव। वाजम्- सम्पदम्। अभि वक्षि- आवह। त्वम्। नः- अस्मभ्यम्। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। सुमेके- सुरूपवत्यौ कुरु ॥५॥

प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजानग्ने त्वं रोदसी नः सुदोघे।

देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि ष्ठात्॥ ३.०१५.०६

वृषभ- वर्षक। अग्ने। वाजान्- अन्नानि। प्र- प्रकर्षेण। पीपय- वर्धय। जिन्व- प्रयच्छ। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। सुदुघे- शोभनदोग्ध्र्यौ कुरु। देव। देवेभिः- देवैः। सुरुचा- शोभनप्रकाशेन। रुचानः- दीप्तो भव। नः- अस्मान्। मर्तस्य- मर्त्यस्य। दुर्मतिः। नः- अस्मान्। मा परि ष्ठात्- मा आक्रमतु ॥६॥

इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।

स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ३.०१५.०७

पूर्वं व्याख्यातम् (३.१.२३) ॥७॥